

Title : Need to implement strong and compulsory FOPL regulations with warning labels-Laid.

डॉ. संघमित्रा मौर्य (बदायूं): भारत पोषण संबंधी विरोधाभासों से भरा देश है जहां कुपोषण के दोहरे बोझ के विशिष्ट मामलों के रूप में अल्प पोषण और मोटापा दोनों साथ साथ मौजूद हैं भारत में 5 वर्ष से कम आयु के एक तिहाई से अधिक बच्चे नाटे और कम वजन के हैं दूसरी ओर बच्चों में मोटापा बढ़ रहा है और लगभग 3.4 मिलियन बच्चे या तो सामान्य से अधिक वजन वाले हैं या फिर मोटापे के शिकार हैं यह पिछले 5 वर्षों से 50% से अधिक की वृद्धि है औसतन 15% भारतीय बच्चे किसी ना किसी प्रकार के मोटापे का सामना कर रहे हैं । भारत में 5 वर्ष से कम आयु के सभी बच्चे की जितनी मृत्यु दर है उनमें से लगभग आधे की मौत का कारण कुपोषण है । वैश्विक अनुमान के अनुसार लगभग 2.3 बिलियन बच्चे और वयस्क सामान्य से अधिक वजन वाले हैं । अधिक मात्रा में शर्करा सोडियम, संतृप्त वसा, और परिष्कृत कार्बोहाइड्रेट युक्त अति संसाधित खाद्य पदार्थों की बढ़ती उपलब्धता मोटापे की महामारी का प्रमुख कारण है । CSE द्वारा किये गए अध्ययन में 33 लोकप्रिय जंकफूड्स के नमूनों को शामिल किया गया था तथा इनमें नमक, फैट, ट्रांसफैट एवं कार्बोहाइड्रेट्स की मात्रा की जाँच की गई । इन खाद्य पदार्थों की उपयुक्तता की जाँच हेतु CSE ने अनुशंसित आहार भत्ता (Recommended Dietary Allowance-RDA) को आधार माना । एक स्वस्थ व्यक्ति द्वारा प्रतिदिन की पोषण आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु लिये जाने वाले आहार में पोषकों की औसत मात्रा को RDA कहा जाता है । भारत में RDA की मात्रा का निर्धारण विश्व स्वास्थ्य संगठन (World Health Organisation) तथा राष्ट्रीय पोषण संस्थान (National Institute of Nutrition-NIN) द्वारा किया जाता है । मैं सरकार से युवाओं और बच्चों के स्वास्थ्य भविष्य के लिए इंडियन न्यूट्रिशन रेटिंग (स्टार द्वारा) के बजाय चेतावनी लेबल सहित मजबूत व अनिवार्य एफओपीएल नियामक के लाने के आग्रह करती हूँ । जिससे लोगों को पैकड फूड के पोषण की पूरी जानकारी के साथ अधिक नमक चीनी और वसा की जानकारी मिल सके ।